IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के षिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन

A STUDY OF THE STUDENT'S PERCEPTION TOWARDS SECONDARY SCHOOL TEACHER'S CLASSROOM BEHAVIOR

श्रीमती पुष्पा कुमावत
सहायक प्रोफेसर
बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

1. षोध सार :–

प्रस्तुत षोध कार्य षिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण के अध्ययन से सम्बन्धित है।इस षोध के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के बालक–बालिकाओं की षिक्षक–व्यवहार व षिक्षकों के प्रति अधिक अपेक्षाएं रहती है। वर्तमान षिक्षा–प्रणाली पूर्णतः बाल–केन्द्रित हो चुकी है जिसमे विद्यार्थी व अध्यापक के मध्य सकारात्मक सम्पर्क होने चाहिए इससे विद्यार्थियों मे आत्म–विष्वास व सौहार्द की भावना का विकास होगा।

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किषोर वर्ग के होते है। जिनमें अवबोध का विकास होता है वे षिक्षकों के व्यवहार को अपने प्रत्यक्षण से देखते है। विद्यालय में षिक्षकों को उचित षिक्षण कौषल, सकारात्मक व्यवहार, विद्यार्थियों की समस्याओं का निर्देषन व मार्गदर्षन तथा षैक्षिक कार्यो का निष्पादन व क्रियान्वन सम्बन्धी कार्य करते है और इन्ही के प्रति विद्यार्थी अपने भिन्न–भिन्न प्रत्यक्षीकरण बना लेते है। षिक्षकों को छात्र–छात्रा दोनों के प्रति समान व्यवहार करना चाहिए ताकि विद्यार्थी उनके प्रति सकारात्मक प्रत्यक्षण को विकसित कर सके। षोध निष्कर्षतः छात्र व छात्राओं का षिक्षकों के व्यवहार के प्रति समान व सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण पाया गया है।

2. षोध का षीर्षक :–

''माध्यमिक स्तर के षिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन''

3. षोध की पृष्ठभूमि :–

Good Teacher Know How To

Bring Out The Best in Students.

षिक्षा प्रणाली में एक अध्यापक का विद्यार्थियों के प्रति किया गया व्यवहार सबसे महत्वपूर्ण होता है। विद्यालय के वातावरण को देखकर छात्र–छात्राओं के मन में बहुत–सी आकांक्षाएँ उत्पन्न होती है, जिनकी पूर्ति करने में षिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस पूर्णता की जाँच षिक्षण में प्रभाविकता, गुणवत्ता व महत्व के आधार पर कर सकते है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किषोर वर्ग के होते है, इस वर्ग में सही–गलत की भावना का विकास होना प्रारम्भ होता है, वे स्वयं के प्रत्यक्षण का निर्माण कर लेते है, एव इसे ही उचित मानते है। छात्र–छात्रा षिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार में उनके द्वारा किये गये व्यवहार, अनुप्रयोग में लायी जाने वाली षिक्षण विधियाँ, षिक्षण–कार्यो के निष्पादन व क्रियान्वन तथा समस्याओं के समाधान हेतु दिये गये परामर्ष व निर्देषन के प्रति आत्म–सम्प्रत्ययों का निर्माण कर लेते है। इन सम्प्रत्ययों को ही वे सही मानते है। इसलिए कक्षागत–व्यवहार अनुकूल हुआ तो छात्र–छात्राओं में सकारात्मक प्रत्यक्षण का विकास होगा।

4. षोध के उद्देष्य :–

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों के द्वारा अनुप्रयोग में लाये जाने वाले शिक्षण–कौशलों के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।
3. शिक्षकों के शिक्षण कार्यों के निष्पादन व क्रियान्वन के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।
4. शिक्षकों द्वारा दिये जाने वाले निर्देशन व परामर्श के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।
5. शिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करना।

5. अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण में अन्तर नही पाया जाता।
2. शिक्षकों के द्वारा अनुप्रयोग में लाये जाने वाले शिक्षण–कौशलों के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण में अन्तर नही पाया जाता।
3. शिक्षकों के शिक्षण कार्यों के निष्पादन व क्रियान्वन के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण में अन्तर नहीं पाया जाता।

4. शिक्षकों द्वारा दिये जाने वाले निर्देशन व परामर्श के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण में अन्तर नहीं पाया जाता।
5. शिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण में अन्तर नहीं पाया जाता।

6. षोध प्रविधियाँ :–

1. **षोध विधि :–** प्रस्तुत षोध में षोधकर्त्री द्वारा षिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
2. **जनसंख्या :–** प्रस्तुत षोध में जनसंख्या के रूप में जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को षामिल किया गया है।
3. **न्यादर्ष :–**
   1. प्रस्तुत षोध कार्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का षिक्षकों के व्यवहार के प्रति प्रत्यक्षीकरण को जानने के लिये किया गया है। उपयुक्त षोध हेतु षोधकर्त्री द्वारा जयपुर षहर के 4 निजी विद्यालयों का चयन सोद्देष्य विधि से तथा 300 छात्र–छात्राओं (150 छात्र, 150 छात्रा) माध्यमिक स्तर के यादृच्छिक विधि से किया गया है। ताकि षोध कार्य हेतु सभी विद्यार्थियों को चुनाव के समान अवसर प्राप्त हो सके।
4. यादृच्छिक विधि द्वारा एक कक्षा में चुनाव करने के लिए सम–विषम विधि का प्रयोग किया गया।
5. यह प्रक्रिया सभी विद्यालयों में की गई एवं 300 विद्यार्थियों का चुनाव किया गया।

क्र.सं.	शैक्षिक संस्थाएँ	विद्यार्थियों की संख्या
1.	श्री कृष्णा पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल (विद्याधर नगर)	50 छात्र–छात्राएँ
2.	ज्ञान ज्योति सीनियर सैकण्डरी स्कूल (विद्याधर नगर)	50 छात्र–छात्राएँ
3.	शांति विद्या निकेतन सीनियर सैकण्डरी स्कूल (निवारू रोड़)	50 छात्र–छात्राएँ
4.	प्रकाश पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल (झोटवाड़ा)	50 छात्र–छात्राएँ
5.	ज्ञान दीप सीनियर सैकण्डरी स्कूल (नया खेडा)	50 छात्र–छात्राएँ
6.	ब्राइटमून सीनियर सैकेण्डरी स्कूल (विद्याधर नगर)	50 छात्र–छात्राएँ

7. उपकरण :–

प्रस्तुत अध्ययन में षोधकर्त्री द्वारा आँकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रष्नावली का निर्माण किया गया इसमें 40 वस्तुनिष्ठ प्रष्नों का निर्माण किया गया।

क्र.स	आयाम	प्रश्न संख्या
1.	षिक्षक–व्यवहार	10 प्रष्न
2.	षिक्षण–कौषल	10 प्रष्न
3.	षिक्षण कार्यो के निष्पादन व क्रियान्वन	10 प्रष्न
4.	परामर्श व निर्देषन	10 प्रष्न

चरण :–

1. आयामों के बारे में विषय–विषेषज्ञों के साथ चर्चा की गई।
2. चुने हुए तथ्यों के आधार पर प्रष्नों का निर्माण कर, निर्देषिका को जाँच करवाई गई।
3. निर्देषिका द्वारा सही प्रष्नों को प्रष्नावली में रखा गया, अनुपयुक्त प्रष्नों को हटा दिया गया।
4. प्रष्नावली का पुनर्निमाण कर विषेषज्ञों की सलाह लेकर, वैधता निकाली गई, फिर विष्वसनीयता का मापनी परीक्षण व 15 दिन बाद समान पुनः परीक्षण द्वारा किया गया। फिर प्रष्नावली का निर्माण किया गया। विष्वसनीयता जाँच हेतु षोधार्थी ने अर्द्ध–विच्छेद विधि का प्रयोग किया है। यहाँ समस्त परीक्षण का विष्वसनीयता गुणांक 0.87 दोनो परीक्षणों की विष्वसनीयता गुणांक 0.78 से अधिक है।

8. प्रदत्त संचयन :–

प्रस्तुत षोध माध्यमिक स्तर के षिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन करने के लिए किया गया।

चरण :–

1. षोधकर्त्री ने इस षोध हेतु 4 विद्यालयों का चयन सोद्देष्य विधि के आधार पर सर्वेक्षण विधि प्रक्रिया द्वारा किया गया।
2. सर्वप्रथम प्रत्येक विद्यालय के कक्षा 9 वीं व 10 वीं के छात्र–छात्राओं को चुना गया। प्रत्येक विद्यालय के 75 छात्र–छात्राओं का चयन सम–विषम विधि सके किया गया। कुल 300 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया।
3. षोधकर्त्री द्वारा सभी विद्यार्थियों से स्वनिर्मित प्रष्नावली जिसमें 40 वस्तुनिष्ठ प्रष्न थे, उनको भरवाया गया।
4. प्रश्नों की जाँच (1–0) से सही उत्तर 1 अंक व गलत उत्तर को 0 अंक दिये गये।

अन्त में परिणाम के आधार पर पाया गया कि

9. परिणाम :–

विष्लेषण के पश्चात् परिणाम प्राप्त हुआ कि छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षण में अंतर नहीं है, अर्थात् माध्यमिक स्तर के षिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राएँ सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण रखते है।

परिकल्पना– 1

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण में अन्तर नहीं पाया जाता।

समूह	संख्या	प्रतिशत
छात्र	150	82%
छात्रा	150	79.3%

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि शिक्षकों के व्यवहार के प्रति छात्रों का 82 % सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण तथा छात्राओं का 79.3 % सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण पाया गया है।

परिकल्पना– 2

शिक्षकों के द्वारा अनुप्रयोग किये जाने वाले शिक्षण–कौशलों के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण में अन्तर नहीं पाया जाता।

समूह	संख्या	प्रतिशत
छात्र	150	84 %
छात्रा	150	86 %

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि शिक्षकों के द्वारा अनुप्रयोग किये जाने वाले शिक्षण–कौशलों के प्रति छात्रों का 84 % सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण तथा छात्राओं का 86 % सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण पाया गया है।

परिकल्पना– 3

शिक्षकों के शिक्षण–कार्यों के निष्पादन व क्रियान्वन के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण में अन्तर नहीं पाया जाता।

समूह	संख्या	प्रतिशत
छात्र	150	81 %
छात्रा	150	81.66%

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि शिक्षकों के शिक्षण–कार्यों के निष्पादन व क्रियान्वन के प्रति छात्रों का 81% तथा छात्राओं का 81.66 % सकारात्मक प्रत्यक्षण पाया गया है।

परिकल्पना– 4

शिक्षकों द्वारा दिये जाने वाले निर्देशन व परामर्श के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण में अन्तर नहीं पाया जाता।

समूह	संख्या	प्रतिशत
छात्र	150	80 %
छात्रा	150	75 %

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि शिक्षकों द्वारा दिये जाने वाले निर्देशन व परामर्श के प्रति छात्रों का प्रत्यक्षीकरण 80 % तथा छात्राओं का 75 % सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण पाया गया है।

परिकल्पना– 5

शिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण में अन्तर नहीं पाया जाता।

समूह	संख्या	प्रतिशत
छात्र	150	85 %
छात्रा	150	82 %

व्याख्या एवं विश्लेषण :–

उपरोक्त तालिका के अनुसार शिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति छात्रों का सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण 85 % है तथा छात्राओं का 82 % सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण पाया गया है।

10. परिकल्पानाओं से प्राप्त निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने प्रतिशत सांख्यिकी के द्वारा परिणामों का विवेचन व विश्लेषण किया है। सांख्यिकी विश्लेषण के उपरांत शोधकर्त्री को निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

❖ **परिकल्पना 01 : माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण मे अंतर नहीं पाया जाता।**

➢ **निष्कर्ष :–** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण पर शिक्षकों के व्यवहार का अध्ययन किया गया है। इसमें छात्रों में 82 % सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण तथा छात्राओं में 79.3 % सकारात्मक प्रत्यक्षण पाया गया है। इस शोध से प्राप्त हुआ कि विद्यार्थी शिक्षकों के व्यवहार को देखकर प्रोत्साहित होते है। छात्रों के प्रति शिक्षकों का व्यवहार मित्रवत् व अनुशासन वाला होता है, जबकि छात्राएँ अत्यधिक संवेदनशील होने के कारण अध्यापकों से जल्दी नहीं जुड़ पाती क्योंकि उनमें प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया ठहराव वाली होती है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, किशोर वर्ग के होते है, वे अध्यापकों के प्रति आत्म–सम्प्रत्यय के आधार पर प्रत्यक्षण का निर्माण कर लेते है।

❖ **परिकल्पना 02 : शिक्षकों के द्वारा अनुप्रयोग किये जाने वाले शिक्षण–कौशलों के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण मे अंतर नहीं पाया जाता।**

➢ **निष्कर्ष :–**शोधकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के द्वारा अनुप्रयोग किये जाने वाले शिक्षण–कौशलों के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया गया है। इसमें छात्रों में 84 % तथा छात्राओं में 86 % सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण पाया गया है। इस शोध से प्राप्त हुआ कि शिक्षक, कक्षा में अपने विषयों के अनुसार विभिन्न शिक्षण– विधि– प्रविधि, शिक्षण–तकनीक आदि का उपयोग प्रभावशाली तरीके से करते है। जिससे कक्षा में शिक्षक–विद्यार्थी के मध्य अन्तः क्रिया भी होती है। इससे छात्र–छात्राओं में शिक्षकों के शिक्षण–कौशलों के प्रति सकारात्मक प्रत्यक्षण का विकास होता है। वे अध्ययन उचित तरीके से कर पाते है।

❖ **परिकल्पना 03 : शिक्षकों के शिक्षण–कार्यों के निष्पादन व क्रियान्वन के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण मे अंतर नहीं पाया जाता।**

➢ **निष्कर्ष :–**शोधकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के शिक्षण–कार्यों के निष्पादन व क्रियान्वन के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया गया है। इसमें छात्रों में 81 % सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण तथा छात्राओं में 81.66% सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण पाया गया है। इस शोध से प्राप्त हुआ कि शिक्षक अपने कार्यों को प्रभावी तरीके से करते है। वे अपने दैनिक–कार्य, जैसे – डायरी चैक, शिक्षक–अभिभावक मीटिंग, गृहकार्य–जाँच, प्रभावी सम्प्रेषण, कमजोर छात्रों

के लिए अतिरिक्त कक्षाएँ लगवाना आदि कार्यों का प्रभावी निष्पादन करते है। शिक्षकों को प्रभावशाली कार्य–क्रियान्वन के कारण विद्यार्थियों में उनके प्रति सकारात्मक प्रत्यक्षण विकसित होता है।

❖ **परिकल्पना 04 : शिक्षकों द्वारा दिये जाने वाले निर्देशन व परामर्श के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण मे अंतर नहीं पाया जाता।**

➢ **निष्कर्ष :–** शोधकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा दिये जाने वाले निर्देशन व परामर्श के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया गया है। इसमें विद्यालयों निर्देशन व परामर्श समिति के द्वारा विद्यार्थियों को उनकी समस्याओं के समाधान हेतु निर्देशन दिया जाता है। इसमें छात्रों में 80% तथा छात्राओं में 75% सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण प्राप्त हुआ है। इसमें छात्र व छात्रओं को तनाव, पाठ्य–सहमति क्रियाओं में भाग न लेना, परेशान व चुपचाप रहना आदि समस्याओं का समाधान किया जाता है। इसमें विद्यार्थियों में सकारात्मक प्रत्यक्षण पाया गया है।

❖ **परिकल्पना 05 : शिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण मे अंतर नहीं पाया जाता।**

➢ **निष्कर्ष :–** शोधकर्त्री द्वारा माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के कक्षागत–व्यवहार के प्रति छात्र–छात्राओं के प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन किया गया है। इसमें छात्रों में 85% सकारात्मक प्रत्यक्षण तथा छात्राओं में 82% सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण पाया गया है। इस शोध से प्राप्त हुआ कि कक्षा में शिक्षक, सभी विद्यार्थियों के प्रति एक समान–व्यवहार करते है, जिससे कक्षा का वातावरण प्रजातांत्रिक रहता है। उनमें समानता का भाव बना रहता है। शिक्षकों के इसी कक्षागत–व्यवहार के प्रति छात्र–छात्रओं का सकारात्मक प्रत्यक्षीकरण पाया गया है।

11. शैक्षिक निहितार्थ :

शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान आदि विषयों से संबधित प्रयास तब तक अर्थपूर्ण नहीं होते जब तक कि उनका संबंधित क्षेत्र से प्राप्त निष्कर्षों एवं परिणामों का शैक्षिक निहितार्थ नहीं हो तो शोधकर्त्री द्वारा किया गया शोधकार्य व्यर्थ चलता जाता है। अतः मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत शोध निम्नलिखित निहितार्थ होंगे –

➢ **शिक्षण संस्थान व प्रबंधनः** शिक्षण संस्थान व प्रबंधन को विद्यार्थियों के लिए समय–समय पर सह–शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन करवाने हेतु प्रस्तुत शोध प्रेरित कर सकेगा। शिक्षण–संस्थान अपने विद्यालय में कक्षा की भौतिक व मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता को भी बढ़ा सकेंगे तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का समाधान करते हुए शिक्षण–प्रक्रिया को बढ़ा सकेंगे। इस प्रकार शिक्षण संस्थान कक्षा के ऐसे शिक्षागत वातावरण का निर्माण कर सकेंगे, जिसमें विद्यार्थी अपनी शैक्षिक समस्याओं का समाधान कर सकेंगे।

- **विद्यार्थी :** प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में उचित व समन्वित शिक्षक–व्यवहारों से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जगाने व आकांक्षाओं को पूर्ण करने से है। शिक्षकों को उचित शिक्षण–प्रक्रिया, कार्यों का क्रियान्वयन तथा विद्यार्थी की समस्याओं हेतु परामर्श व निदान देना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों का शैक्षिक विकास हो सके।
- **प्रधानाचार्य, शिक्षक व शिक्षा व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों हेतु निहितार्थ :** प्रधानाचार्य, शिक्षक व शिक्षा व्यवसाय से जुड़े प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सभी व्यक्ति विद्यालयों व कक्षा में शिक्षागत–वातावरण गतिविधि आधारित शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के अनुरूप इस प्रकार निर्मित कर सकंगे जिसमें विद्यार्थियों की शैक्षिक–समस्याओं का समाधान हो सके। इस प्रकार विद्यार्थियों की शैक्षिक–आकांक्षाओं की पूर्ति होने से उनकी सृजनात्मकता, क्रियाशीलता, कुशलता का विकास किया जा सकता है। अतः विद्यार्थियों के प्रत्यक्षीकरण की पूर्ति करके उनका सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

12. सन्दर्भ सूची

:: पुस्तक सूची ::

1- **आत्रेय एस. पी (1974)** : "मनोविज्ञान में सांख्यिकी", तारा पब्लिकेषनवाराणसी

2- **चौहान एस. (1989) :** एडवांस एजुकेषनल साइक्लोजी विकास पब्लिकेषन हाउस, नई दिल्ली।

3- **डॉ. व्यास, भगवती लाल, डॉ. सिंह, एच. पी., श्रीमती षर्मा, आर.के., श्री. दुबे, कृष्ण (2006)** : ''षैक्षिक तकनीकी और कक्षा–कक्ष प्रबन्ध'' राधा प्रकाषन मन्दिर, आगरा।

4- **डॉ. सिंह, रामपाल. डॉ. षर्मा, ओ.पी. (2008) :** ''षैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 2

5- **दुबे, एल.एच. (2010) :** ''परामर्ष मनोविज्ञान'' षिक्षा प्रकाषन, जयपुर।

6- **डॉ. गुप्ता, षिप्रा (2010)** : ''निर्देषन एवं परामर्ष'' राखी प्रकाषन प्रा. लिमिटेड

7- **डॉ. चौधरी, प्यारेलाल** : ''षैक्षिक निर्देषन एवं परामर्ष'' स्वाति पब्लिकेषन्स

षोध पत्रिका

1- जर्नल ऑफ एजुकेषन एंड प्रेक्टिस वॉल्यूम 4, नवम्बर 13, 2013

2- इंटरनेषनल कांफ्रेस ऑन रिसर्च एंड पब्लिकेषन अगस्त 24–26, 2018

3- जनरल ऑफ एजुकेषनल साइॅकोलाजिस्ट वाल्यूम 18,1983 (रिसर्च ऑन टीचिंग)

4- इंटरनेषनल एज्यूकेषन स्टडीज वॉल्यूम 6, नवम्बर 2,2013

Websites

- https://www.researchgate.net
- https://www.jstor.org>stable
- www.sciencedirect.com
- www.tandfonline.com>doi